



लेखिका – उषा शर्मा
चित्रांकन – मयूख घोष



21201—दोस्ती

ISBN 978-93-5292-880-4

प्रथम संस्करण

जनवरी 2025 पौष 1946

PD 5T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

₹ 50.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा दिलप्रीत पब्लिशिंग हाऊस, एफ-198, विष्णु गार्डन, नई दिल्ली 110018 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- ❑ प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- ❑ इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- ❑ इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे,
बनाशंकरी III इस्टेज, बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन,
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

- अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम. वी. श्रीनिवासन
- मुख्य संपादक : बिज्ञान सुतार
- मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : जहान लाल
- मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार
- सहायक संपादक : मीनाक्षी
- सहायक उत्पादन अधिकारी : दीपक कुमार

आवरण एवं चित्रांकन

मयूख घोष

ले आउट

डिजिटल एक्सप्रेस

सहयोग हेतु आभार ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) रचनाकारों, उनके परिजनों, संस्थानों या प्रकाशकों के प्रति आभारी है जिन्होंने अपनी रचनाओं को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

परिषद्, रचनाकार, चित्रांकनकर्ता, एकलव्य, एकतारा संस्थाओं, अंजलि तिवारी, वेलफेयर अधिकारी, समाज कल्याण विभाग, दिल्ली; अयाज़ अहमद, डी.टी.पी. ऑपरेटर, सीआईईटी, रा.शै.अ.प्र.प.; नई दिल्ली; किरण, पूर्व जेपीएफ़, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; मोहम्मद आतिर, पूर्व ग्राफ़िक डिज़ाइनर, सीएनसीएल, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; योगेश प्रताप सिंह वर्मा, डी.टी.पी. ऑपरेटर, सीएनसीएल, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सीमा शर्मा, पूर्व वरिष्ठ परामर्शदाता, प्रारंभिक शिक्षा, विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, पुस्तक को वर्तमान स्वरूप प्रदान करने हेतु प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों पारुल त्यागी और शिव मोहन यादव, सहायक संपादक (संविदा); सुरेन्द्र कुमार, प्रभारी, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; मोहन सिंह, डी.टी.पी. ऑपरेटर (संविदा); के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

समीक्षा हेतु आभार ज्ञापन

अक्षय कुमार दीक्षित, मेंटर, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली; नीरा नारंग, आचार्य, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; प्राची कालरा, सहायक आचार्य, गार्गी कॉलेज, नई दिल्ली; मालविका राय, शिक्षाविद्, नई दिल्ली; मुकुल प्रियदर्शिनी, सह-आचार्य (सेवानिवृत्त), मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; वर्षा सिंघल, शिक्षिका, केंद्रीय विद्यालय, कोकराझार, असम; श्वेता उप्पल, पूर्व मुख्य संपादक, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; संध्या सिंह, आचार्य, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सोनिका कौशिक, सहायक आचार्य, जीसस एंड मैरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; स्नेहा सबनिस, अनुवादक, राजभाषा संचालनालय, गोवा सरकार।

कहानियाँ बच्चों को पढ़ने का आनंद देती हैं और साथ ही कुशल बुद्धि, समस्या समाधान एवं तार्किक विश्लेषण की क्षमता का संवर्धन भी करती हैं। फाउंडेशनल और प्रीप्रेटरी स्टेज के बच्चों एवं शिक्षकों के लिए कहानियाँ भाषायी कौशलों एवं आस-पास मौजूद विभिन्न अवधारणाओं को सीखने में भी सहायता करेंगी। कहानियों में आए चित्र बच्चों को अनुमान लगाकर पढ़ने और उन्हें अपने अनुभव संसार से जोड़ते हुए अपनी बात कहने का अवसर तथा आत्मविश्वास भी देते हैं। किसी कहानी का कोई पात्र या घटना बच्चों के जीवन एवं चिंतन को प्रभावित भी कर सकता है और बच्चे उनके साथ तादात्म्य भी स्थापित कर सकते हैं। पढ़ी गई कहानी को अपनी कल्पना के आधार पर आगे बढ़ाने, अपनी कहानी स्वयं रचने का अवसर भी उपलब्ध होंगे। कहानियाँ बच्चों को स्वतंत्र पाठक और सृजनशील लेखक बनने में सहायता करेंगी।

उषा शर्मा

आचार्य एवं कार्यक्रम समन्वयक
प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली



एक दिन तेंदुए के पंजे में फँस गया कछुआ!
क्या कछुआ बच पाया?
जानने के लिए कीजिए दोस्ती किताब से...!

लेखिका – उषा शर्मा
चित्रांकन – मयूख घोष



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

बात एक जंगल की है! एक कछुआ अपनी ही धुन में चला जा रहा था। वहाँ एक तेंदुआ झाड़ी में छिपा हुआ था। तेंदुए की नज़र कछुए पर थी। वह झपाक से कछुए के सामने आ गया!





कछुआ पहले तो डरा, फिर जल्दी से अपने ही
मोटे खोल में दुबक गया। लेकिन तेंदुए ने ढप्प से
कछुए को अपने पंजे में दबा लिया।

तेंदुए ने सोचा —“अरे, यह तो बहुत कड़ा है!
कैसे खाऊँ?”





सियार दूर से सब देख रहा था। सोच रहा था
कि अपने दोस्त कछुए को कैसे बचाऊँ?
सियार डरते-डरते तेंदुए के पास पहुँचा। तेंदुए ने
सियार को देखा और गुस्से से कहा — “यह मेरा
शिकार है, इसे मैं खाऊँगा।”

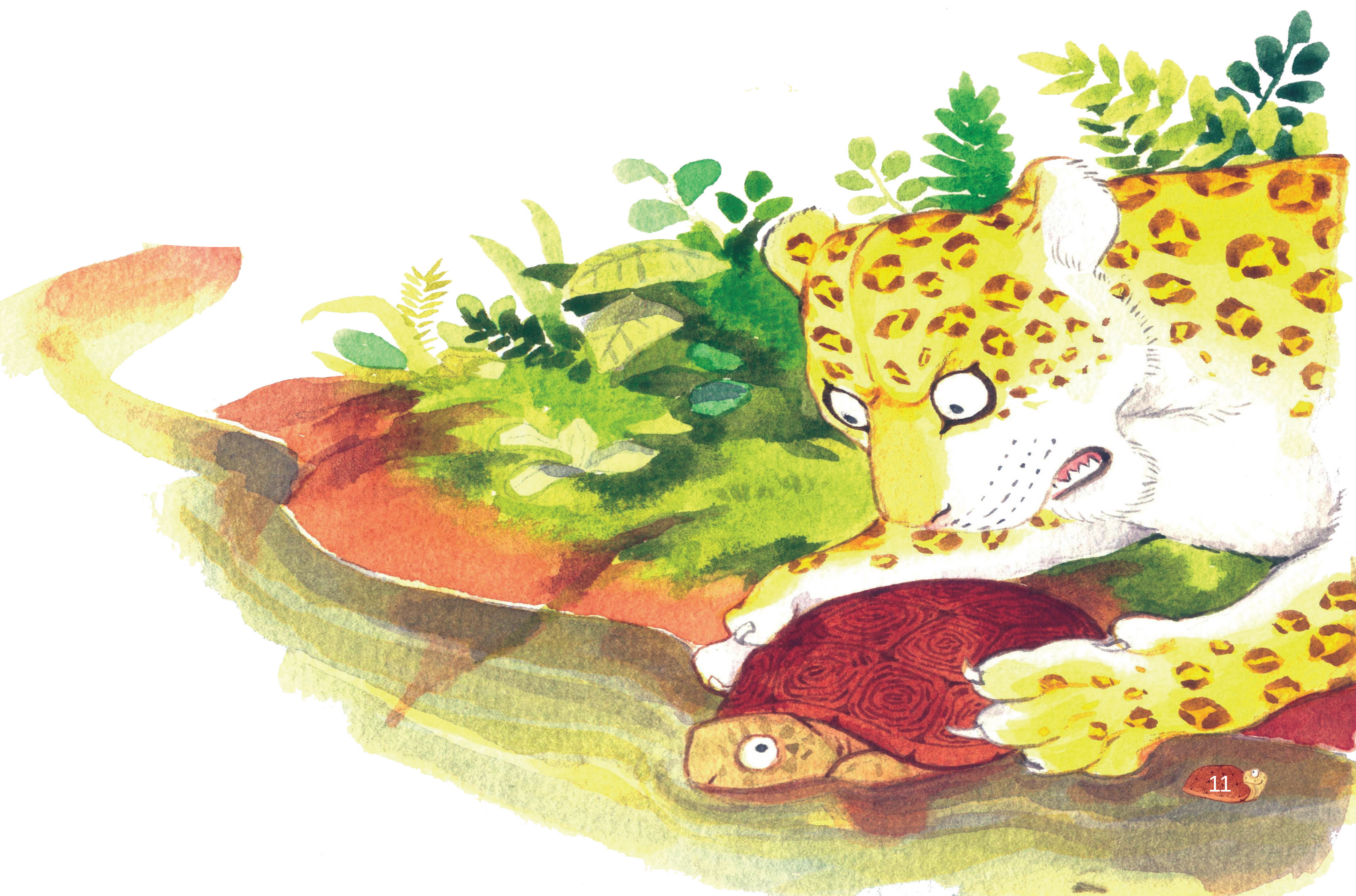


सियार ने कहा — “ ठीक है भाई! तुम ही खाना,
लेकिन पहले इसे पानी में भिगोकर मुलायम तो
कर लो।”

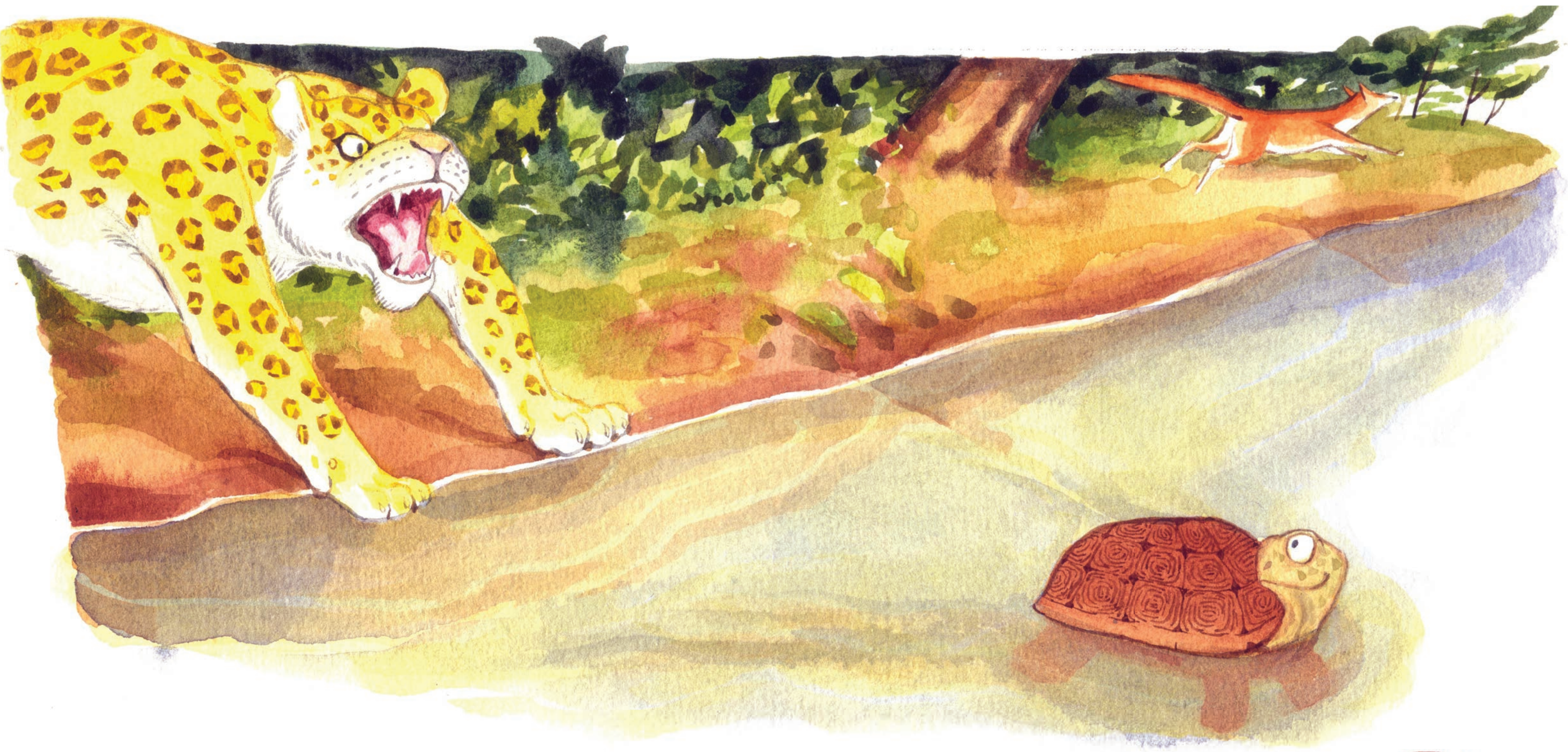
“हाँ! यह भी ठीक है।” — तेंदुए ने कहा। नदी पास
में ही थी।



यह क्या! जैसे ही तेंदुआ कछुए को नदी में
डालने लगा, कछुआ नदी में कूद गया! छपाक!
तेंदुआ रह गया अवाक!



अब न तो कछुआ था और न ही था सियार!
तेंदुआ मन-ही-मन बड़बड़ाया— “नहीं छोड़ूँगा
अगली बार!”



लेखिका



उषा शर्मा

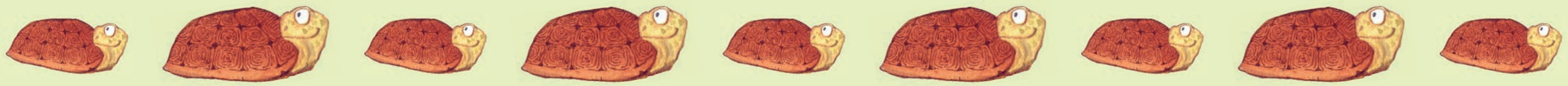
आचार्य उषा शर्मा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) के राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ की प्रभारी के रूप में एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं। आचार्य उषा शर्मा तीन दशकों से अधिक समय से बच्चों की शिक्षा के लिए काम कर रही हैं। प्रारंभिक स्तर पर भाषा-शिक्षा, बुनियादी साक्षरता (पढ़ना-लिखना), बाल साहित्य, प्रौढ़ शिक्षा, आदि विषयों में इनकी विशेषज्ञता है। राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक एवं विभिन्न प्रकार की संसाधन सामग्री निर्माण में अहम भागीदारी रही है। आचार्य उषा शर्मा रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका *फिरकी बच्चों की* एवं शोध पत्रिका *प्राथमिक शिक्षक* की अकादमिक संपादक भी हैं।

चित्रांकन

मयूख घोष

मयूख घोष कोलकाता, पश्चिम बंगाल के रहने वाले हैं। वे महाराजा सायाजीराव विश्वविद्यालय, गुजरात से विज्ञान आर्ट्स में स्नातक (बीवीए) हैं। इन्होंने बाल साहित्य चित्रांकन में रियाज अकादमी (भोपाल) से प्रशिक्षण लिया है। मयूख एक स्वतंत्र कलाकार के तौर पर कला के क्षेत्र से जुड़े हैं। इन्होंने एकलव्य, इकतारा, रूम टू रीड, पराग, कराड़ी टेल्स, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) आदि विभिन्न प्रकाशकों के साथ काम किया है। *अब तुम गए काम से*, *द टेल ऑफ़ बब्बन हज्जाम*, *सियार और मोर* आदि मयूख द्वारा चित्रित कुछ पुस्तकों में से प्रमुख हैं।





1. कुछ हम कहें, कुछ तुम कहो!

क. तेंदुए ने ढप्प से कछुए को अपने पंजे में दबा लिया।

- तेंदुआ किस-किस पशु-पक्षी को अपने पंजे में नहीं दबा सकता और कैसे?
- अगर कछुए की जगह हिरन या अजगर होता तो तेंदुआ उन्हें कैसे पकड़ता?
- सियार ने कछुए की जान कैसी बचाई?
- क्या किसी और तरीके से कछुए की जान बच सकती थी? कैसे?

ख. 'तेंदुआ रह गया अवाक!' का अर्थ है — चकित या हक्का-बक्का हो जाना, मुँह से एक शब्द भी न निकलना।

- किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब आप अवाक रह गए हों।

ग. सियार ने अपने दोस्त कछुए की जान बचाई। किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए —

- जब आपने किसी की जान बचाई हो।
- जब किसी ने आपकी जान बचाई हो।

2. सबकी कहानी!

क. आप अपने परिवार एवं दोस्तों को यह कहानी अपनी भाषा में सुनाइए।

ख. तेंदुए ने अपने घर जाकर यह कहानी कैसे सुनाई होगी?

ग. कछुए ने अपने परिवार या दोस्तों को यह कहानी कैसे सुनाई होगी?

3. नीचे दिए गए अक्षर जाल में से जानवरों के नाम खोजकर लिखिए —

ब	क	री	बि
त्त	शे	छ	ल्ली
ख	र	गो	श
चू	हा	थी	तो

4. करके देखिए और बताइए —

सियार ने कहा कि पानी में कछुए का कड़ा खोल मुलायम हो जाएगा। आप पता कीजिए कि पानी में इन चीज़ों का क्या होता है —

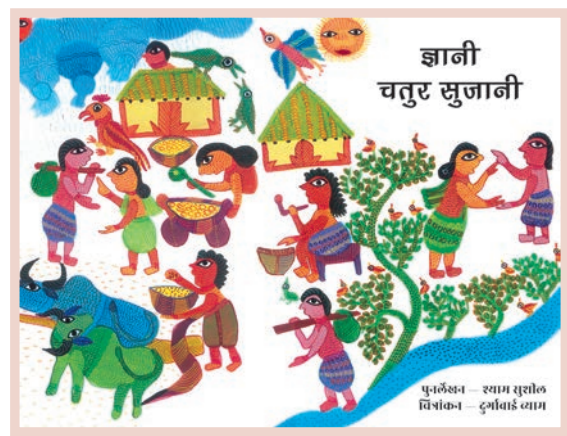
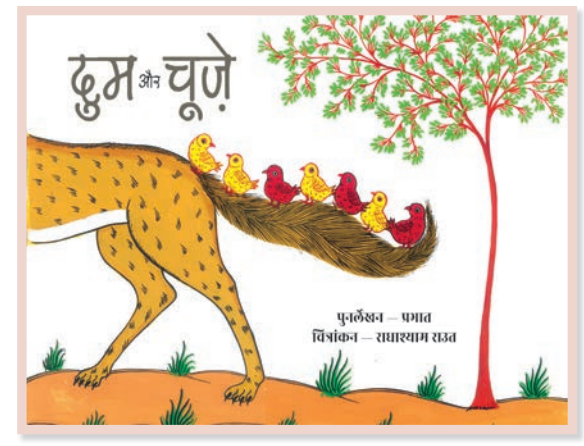
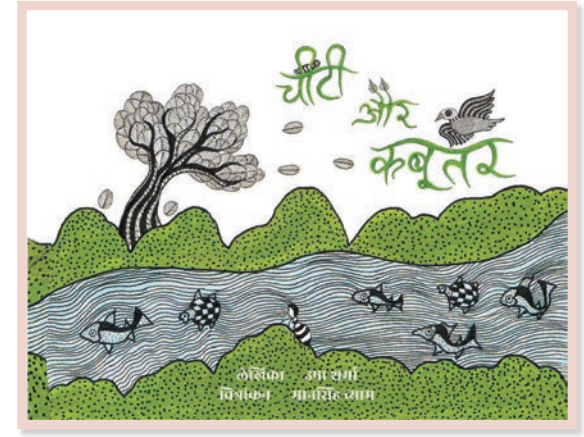
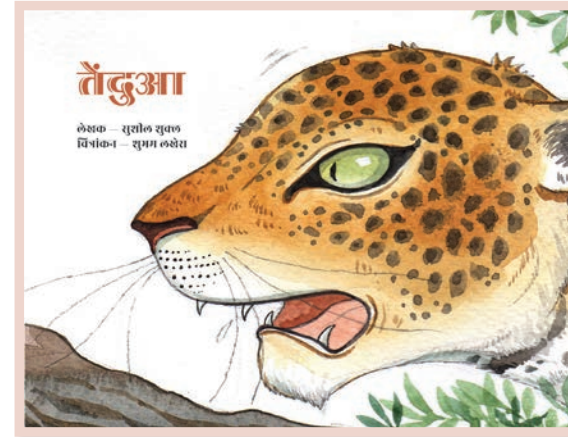
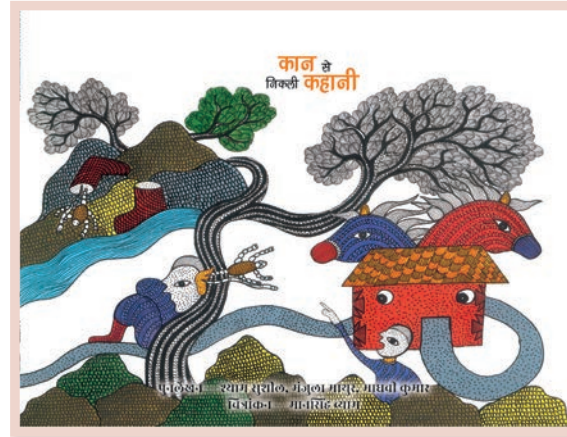
पानी वाले रंग	नमक	चीनी
कागज़	पंख	कंकड़



5. मेरी कलाकारी

कहानी में आपको कौन-सी बात सबसे अधिक पसंद आई? उसका चित्र बनाइए —

और भी हैं मजेदार कहानियाँ...



असंख्य वृत्तांत प्राप्त करने
के लिए स्कैन एवं डाउनलोड करें
राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय –
आपका डिजिटल पुस्तकालय!



21201

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-880-4